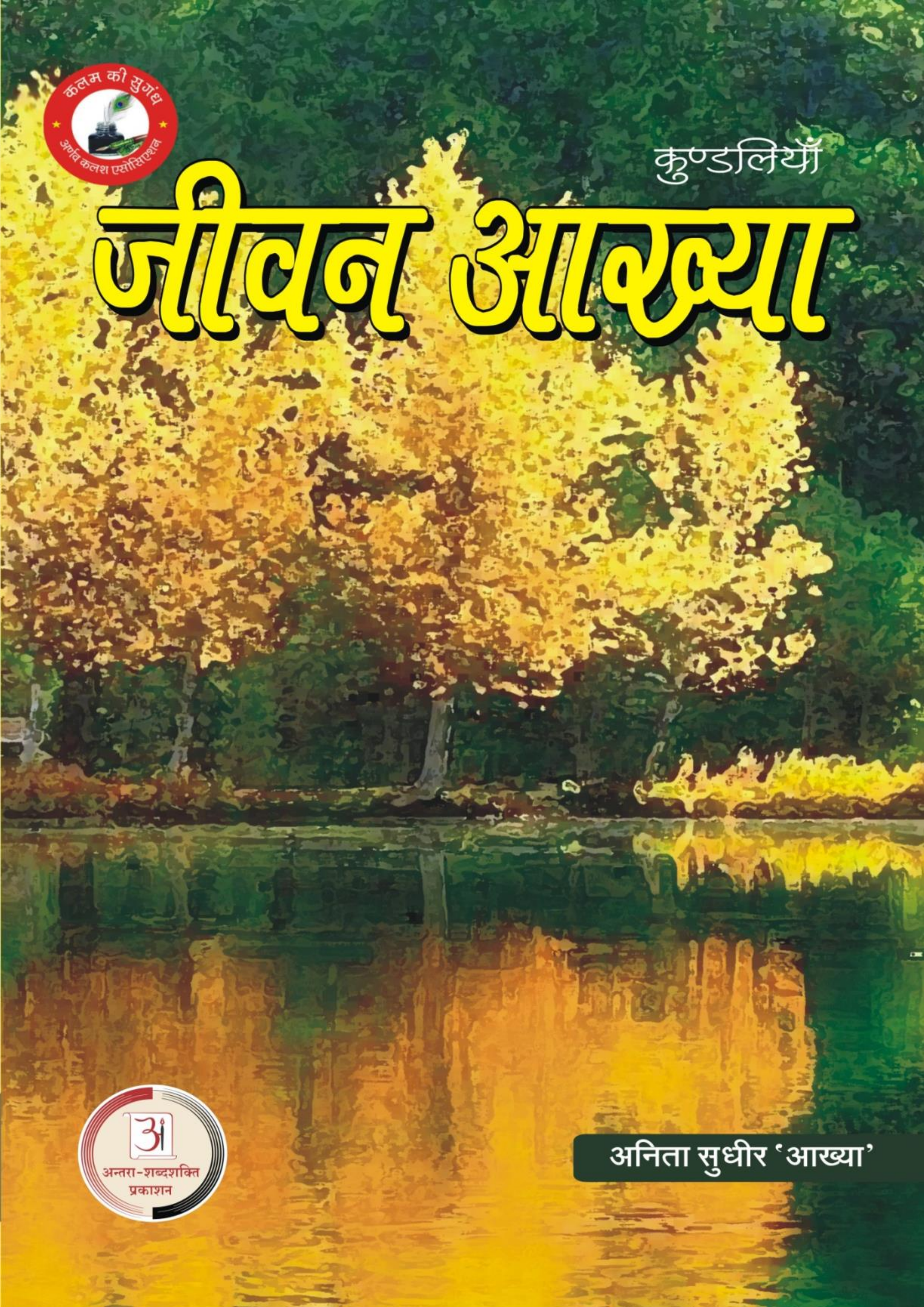

कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

कुण्डलियाँ

जीवन आख्या

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

अनिता सुधीर 'आख्या'

जीवन आख्या

(कलम की सुगंध छंदशाला)

अनीता सुधीर 'आख्या'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-228-9
संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, अनिता सुधीर 'आख्या'
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ANITA SUDHIR AKHYA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

जीवन जीना है यहाँ, बनकर आज सुधीर।
कहती सपना है यही, मत हों आप अधीर।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्‌वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पर शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीया "अनिता सुधीर" जी का एकल संग्रह **"जीवन आख्या"** प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया अनिता जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया अनिता जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मकता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

मुख्य संचालिका

अनिता मंदिलवार सपना

कलम की सुगंध छंदशाला

समीक्षा

आदरणीय अनीता सुधीर 'आख्या' जी

आप विज्ञान की छात्रा होकर भी आपने कुंण्डलियाँ सृजन में शतक बना लिया है, निःसंदेह आपकी सशक्त कलम से जो कुण्डलियाँ अंकुरित प्रस्फुटित हुई है वे सराहनीय हैं, प्रशंसनीय हैं कई साझा संग्रह में जैसे 'ये दोहे बोलते हैं, कई छंद में अपनी कलम चलाई है और श्रेष्ठ रचनाकार के सम्मान से सम्मानित हुई है पर छंद में कुण्डलियाँ लिखना सभी छंदों में जटिल माना जाता है इस विधा को आप की प्रतिबद्ध लेखनी ने सरल बना कर **'जीवन आख्या'** नामक एक पुस्तक के रूप में पाठकों तक पहुंचने का सतत प्रयास किया है।

आप की कुंडलियां आप के जीवन के विभिन्न पहलू को एक बार नहीं पूरे सौ बार अति उत्तम भाव, सुन्दर शब्द चयन अलग.अलग तरह से सजी है, संवरी है, फिर निखर कर आई है। जिसमें कहीं भी किसी कुंडलियों में दोहराव नहीं दिखता इसीलिए सीधी पाठक के हृदय तक उतरने वाली है।

आप की कुंडलियां आप के आत्मविश्वास का परिचायक है। यह निश्चय ही पाठक वर्ग को एक नई राह प्रदान करते हुए साहित्य जगत में आप के नाम को प्रकाशित करने में सिद्ध होगा।

सपने सबके सच करे, करे शोध के काम।
कैंसर पीडित देख कर, लेती उसको थाम।।
लेती उसको थाम, प्रीत की बांधे डोरी।
गम को जाती भूल, खुशी से गाती लोरी।।
सुवासिता सुन बात, गैर सब बनते अपने।
अनिता हर लो कष्ट, करो तुम पूरे सपने।।

आपकी पुस्तक **'जीवन आख्या'** की सफलता के लिए बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं।

चमेली कुर्रे 'सुवासिता'
चिकित्सा प्रयोगशाला तकनीशियन,
जगदलपुर (बस्तर, छ.ग.)

शुभकामना संदेश

प्रिय अनिता सुधीर जी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह **'जीवन आख्या'** विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें।

इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक **'विज्ञात'**
संस्थापक
कलम की सुगंध

कवियत्री की कलम से

शाला के सहयोग से, शतकवीर सम्मान।
गुरुजन को आभार है, रचते नये विधान।
रचते नये विधान, बने जो आप सहारा।
सुंदर सा परिवार, मिला ये हमको प्यारा।
शत शत करूँ प्रणाम, रत्न ये अद्‌भुत माला।
सिखा नियम का पाठ, बनाती जीवन शाला।

माँ शारदे की अनुकम्पा और प्रभु के आशीष से ये जीवन का अनमोल पल है, जब अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन के माध्यम से मेरी शतक कुंडलियों का एकल संग्रह जीवन आख्या आप सब के समक्ष है। कहते हैं न, कि जो होता है, वो अच्छे के लिये होता है। मन में उठते भावों को व्यक्त करने के लिये कलम को मित्र बनाया और *कलम की सुगंधशाला* ने लेखनी को विस्तार दिया।

जीवन आख्या में जीवन के अनुभव को सांचे में ढालने का प्रयास किया है। औषधि क्षेत्र में शोध से चली यात्रा, अब हिन्दी साहित्य के बारीकियों में मंजिल ढूँढ़ रही है। इस यात्रा में आ.विज्ञात जी का वरद हस्त और आ.अनिता मंदिलवार जी का मार्गदर्शन और आ.कुसुम जी तथा सभी सम्मानित मित्रों का समय समय पर सहयोग मिला जिसके लिये मैँ हृदयतल से आभारी हूँ।

पति और परिवार के प्रेम तथा निरंतर सहयोग के लिये कृतज्ञ हूँ जिनके प्रोत्साहन से मुझे सदैव मानसिक संबल मिला और मेरा आत्मविश्वास बढ़ा। आज मुझे अपने पिताजी और पिता तुल्य श्वसुर जी की कमी बहुत अखर रही है, परन्तु उनका आशीर्वाद ही इस पुस्तक के प्रकाशन का आधार है। आ.विज्ञात जी को पुस्तक के लिये शुभकामना संदेश, आ.मंदिलवारजी को पुस्तक की भूमिका और आ.चमेली जी को समीक्षा करने के लिये सादर वंदन।

अंततः मेरा ये कुंडलिया संग्रह जीवन आख्या प्रिय पाठकों को सादर सप्रेम समर्पित है...

अनिता सुधीर आख्या
लखनऊ, 226022

1.

वेणी

नारी के श्रृंगार में, सुख समृद्धि का राज।
वेणी निर्बलता नहीं, समझे पुरुष समाज।।
समझें पुरुष समाज, नहीं है चूड़ी बेड़ी।
करते क्यों अपमान, दिखे कन्या तो छेड़ी।।
उसका सम अधिकार, नहीं है वो बेचारी।
रही सृजन आधार, सदा आगे है नारी।।

2.

कुमकुम

टीका कुमकुम लालिमा, सोहे जब ये माथ।
मन मंदिर पावन करे, मिले प्रभो का साथ।।
मिले प्रभो का साथ, कृपा तुम हम पर रखना।
झोली भरना आप, यही कुमकुम है गहना।।
करना अमर सुहाग, बिना इसके सब फीका।
करिये कृपा निधान, अमर माथे का टीका।।

3.

काजल

काजल तेरी आँख का, लूटे दिल का चैन।
रूप सलोना देख के, बीती जाये रैन।।
बीती जाये रैन, लटें तेरी जो बिखरीं।
बढ़े हृदय की प्यास, और भी तुम जो निखरीं।।
तेरा सुंदर रूप, करे अब हमको घायल।
मेरा यही प्रयास, नहीं बहता हो काजल।।

4.

गजरा

गजरा ले लो आप ये, सुनते थे आवाज।
रुके वहाँ कुछ सोच के, छोड़े सारे काज।।
छोड़े सारे काज, दिखी वो कोमल कन्या।
हृदय व्यथित है देख, कहाँ अब इसकी जन्या।
लिया यही संकल्प... करें ये जीवन उजरा।
लेकर आया मोल, उन्हीं हाथों से गजरा।

5.

पायल

पायल की झंकार तुम, करती दिल पर राज।
बेटी तुमसे ही सजे, सबके मन के साज।।
सबके मन के साज, तुम्हीं शोभा घर आंगन।
दो कुल की हो लाज, बहे नदिया सी पावन।
बेटी का रख मान, करो मत इनको घायल।
सजे अधर मुस्कान, सदा बजती हो पायल।।

6.

कंगन

असली कंगन पहन के, महिला करती सैर।
वहाँ लुटेरे मिल गये, कहाँ बची अब खैर।
कहाँ बची अब खैर, देखते सभी तमाशा।
छीना झपटी मार, नहीं थी छोड़ी आशा।
निकले मुख से बोल, लिये जाओ! वो नकली।
बनवा लूँगी चार, बचाये कंगन असली।

7.

डोली

डोली बेटी की सजी, खुशियां मिली अपार।
सपने आंखों में लिये, छोड़ चली घर द्वार।।
छोड़ चली घर द्वार, पिया की हुई दुलारी।
दो कुल की है लाज, सदा खुश रहना प्यारी।।
देते सब आशीष, भरी हो सुख से झोली।
दृग के भीगे कोर, उठी जब तेरी डोली।।

8.

बिंदी

बिंदी माथे पर सजा, कर सोलह श्रृंगार।
पिया तुम्हारी राह ये, अखियां रहीं निहार।।
अखियां रही निहार, तनिक भी चैन न मिलता।
कैसे कटती रात, विरह में तन ये जलता।।
बढ़ती मन की पीर, छेड़ती है जब ननदी।
कहती भैया द्वार, देखते भौजी बिंदी।

9.

कजरा

कजरा अँखियों में लगा, गोरी बैठी द्वार।
रूप सलोना देख के, चन्दा उतरे पार।।
चन्दा उतरे पार, देख के वो भरमाया।
कहे! धरा का चाँद, मुझे क्यों नजर न आया।।
हँस कर कहती बात, अभी लगाया न गजरा।
होगा तब क्या हाल, सजे गजरा अरु कजरा।।

10.

आँचल

तेरा आँचल धूप में, सुखमय शीतल छाँव।
बिन जननी आशीष के, कहाँ मिले है ठाँव।।
कहाँ मिले है ठाँव, मिला ये जीवन तुमसे।
ले मुख पर मुस्कान, छिपाती दुख तुम हमसे।।
तुम हो निधि अनमोल, धन्य है जीवन मेरा।
माँ! जीवन की आस, नाम है ममता तेरा।।

11.

चूड़ी

खनखन करती शोर जो, लगती सरगम राग।
प्रेम मिलन की साक्ष्य ये, चूड़ी चिन्ह सुहाग।
चूड़ी चिन्ह सुहाग, सदा हाथों में सजती।
हैं रँग बिरँगी लाल, खुशी जीवन में भरती।
प्रीतम हैं जब साथ, बजे पायल भी छनछन।
बाहों का है हार, सुने साजन जी खनखन।।

12.

झुमका

रूठी रूठी वो रहीं, पिया करें मनुहार।
आँसू सजनी आँख में, झुमके की तकरार।
झुमके की तकरार, कहो तुम मन की बातें।
देख तुम्हारा हाल, कटेंगी कैसे रातें।।
करी पिया से रार, करो मत बातें झूठी।
झुमका दो उपहार, नहीं तो तब तक रूठी।

13.

जीवन

ख़ुशियाँ जीवन में मिले, सजे पुष्प से रात।
सतरंगी सपने सजे, सदा मिले सौगात।
सदा मिले सौगात, चाँद जैसी तुम चमको।
पूरी हो सब आस, यहाँ सूरज बन दमको।
ऊँचा जग में नाम, बधाई दे तब सखियां।
मिले ईश आशीष, तुम्हीं से मेरी खुशियां।

14.

उपवन

उपवन में सजते रहें, भाँति भाँति के फूल।
माली बन रक्षा करें, समझें इसका मूल।।
समझें इसका मूल, भेद क्यों मन में रखते।
सबके अलग विचार, भाव में अपने रहते।
करिये ऐसी प्रीति, सदा सजता हो मधुबन।
बहती मंद बयार, सुगंधित हो अब उपवन।।

15.

कविता

करती भावों की मोतियां, कविता सृजन महान।
शब्द, छन्द श्रृंगार से, कविगण करें बखान।।
कविगण करें बखान, लिखें वीरों की गाथा।
भरते तन में जोश, झुके श्रद्धा से माथा।।
सच्चाई की राह, कलम जब कवि की चलती।
लाती है बदलाव, सृजन जब अनुपम करती।

16.

ममता

ममता की अनुभूति को, कैसे करूँ बखान।
शब्द असीमित लघु लगे, ममता रही महान।।
ममता रही महान, त्याग की कहे कहानी।
माँ का आँचल छाँव, याद हैं बड़ी सुहानी।।
अपने लहु से सींच, भाव वो रक्खे समता।
माँ जीवन आधार, गोद है उसकी ममता।।

17.

बाबुल

छूटे बाबुल देहरी, छूटा आँचल छाँव।
लाड़ों से पाला जिसे, चली पिया के गाँव।।
चली पिया के गाँव, नये रिश्तों में बँधने।
भीगे नयनन कोर, सजे आँखो में सपने।।
सूना है संसार, चैन वो मेरा लूटे।
बाबुल का आशीष, नहीं घर तेरा छूटे।।

18.

भैया

ममता मिलती मातु से, अनुशासन दें तात।
पग पग पर जो साथ दे, वो है प्यारा भ्रात।।
वो है प्यारा भ्रात, राम ज्यों लक्ष्मण भैया।
बचपन मीठी याद, रहा वो सदा सवैया।।
कहाँ गया शैतान, नहीं मेरा मन रमता।
रहे सदा आबाद, छाँव शीतल हो ममता।।

19.

बहना

बहना बाँधे नेह की, पावन रेशम डोर।
तिलक सजाती शीश पर, भीगा मन का कोर।।
भीगा मन का कोर, तुम्हीं से सजता जीवन।
देती जब आशीष, खिले भाई का उपवन।।
है आशा की भोर, नहीं दुख तुम अब सहना।
इस जग में अनमोल, लाख में मेरी बहना।।

20.

सखियाँ

सखियाँ! सखियों से मिलीं, सरल सहज की बात।
सदियां बीती सी लगी, भूल गयीं दिन रात।।
भूल गयीं दिन रात, कहें सब अपनी गाथा।
खुशियों में थी चूर, प्यार से चूमे माथा।।
छिड़ी सुरीली तान, खुशी से भीगी अखियाँ।
बना रहे ये प्यार, दूर मत जाओ सखियाँ।।

21.

कुनबा

रहती मीठी याद बन, लाड़ प्यार मनुहार।
बात पुरानी हो गयी, कुनबे का संसार।।
कुनबे का संसार, जहाँ सब अपने रहते।
प्रेम भरी तकरार, सभी के सपने सजते।।
होती पल में रार, बुआ समझौता करती।
बाबा की मुस्कान, सदा यादों में रहती।।

22.

पीहर

"पीहर" से "पीघर" चली, लिये सुहानी याद।
सुता बनी अब स्वामिनी, दो घर की बुनियाद।।
दो घर की बुनियाद, नये रिश्तों का बंधन।
आती पीहर याद, हृदय में होता क्रंदन।।
मिले श्वसुर घर मान, रहे मन फिर क्यों बीहर?
नारी जीवन सार, छूट जाता है पीहर।।

23.

पनघट

पनघट पर घट ले खड़ी, मृग तृष्णा की प्यास।
रिक्त घड़ा कैसे भरें, जीवन की ये आस।।
जीवन की ये आस, तप्त मन कर दें शीतल।
एक बूँद की चाह, तृप्त करें अब हृदयतल।।
खोज रही हूँ राह, तृषा का लगता जमघट।
भरिये घट में ज्ञान, सिक्त कर दें इस पनघट।।

24.

सैनिक

सैनिक सरहद पर खड़े, नहीँ जान से मोह।
सोयें हम सब चैन से, सहे कुटुम्ब बिछोह।।
कुटुम्ब सहे बिछोह, कठिन स्थितियों में रहते।
लिये अधूरी नींद, कभी व्यथा न वो कहते।।
रहते सजग सुजान.... करें सब वो वैधानिक।
अरि का करें विनाश, खड़े रक्षा को सैनिक।।

25.

कोयल

कोयल मीठा बोलती, कौवा करता काँव।
श्याम रंग दोनों सजे, कोयल कूके गाँव।।
कोयल कूके गाँव, कुहुकती डाली डाली।
वाणी सुर संगीत, लगे कितनी मतवाली।।
गुण का होता गान, हृदय में खिलती कोपल।
जानो उत्तम सीख, बोल हों जैसे कोयल।।

26.

अम्बर

आओ हम तुम सँग चले, अम्बर के उस पार।
सतरंगी हो सज उठे, रोशन हो संसार।।
रोशन हो संसार, चाँद जो अँगना उतरे।
सजें सितारे रात, नित्य ही खुशियां बिखरे।।
सूरज का ले ताप, प्रेम की अगन जलाओ।
लिए मिलन की याद, धरा पर वापस आओ।।

27.

अविरल

रुकिये मत थक हार के, करिये दुर्गम पार।
अविरल वैसे ही चलें, ज्यों सरिता की धार।।
ज्यों सरिता की धार, सदा चलते ही जाना।
सदा करें उपकार, काम दूजे के आना।।
होगा कष्ट अपार, कभी मत फिर भी झुकिये।
बाधा होगी पार, सदा मंजिल पर रुकिये।।

28.

सागर

मतवाली लहरें चलीं, करती रहतीं शोर।
उठती गिरती जा मिलीं, सागर तट के छोर।
सागर तट के छोर, दृश्य है बड़ा विहंगम।
नाव चली मझदार, डोलती रहती दुर्गम।।
लहरें चूमे व्योम, क्षितिज पर फैली लाली।
खड़ी रहूँ दिन रात, यहीं पर मैं मतवाली।।

29.

अनुपम

अनुपम सुंदर लेखनी, शब्दों का संसार।
भाव शिल्प लय छन्द से, कविता ले आकार।।
कविता ले आकार, कभी सूरज सी तपती।
तारों की कर बात, चाँद की बातें कहती।।
कहती उर के भाव, धरा का वर्णन निरुपम।
प्रभु का हो आशीष, लेखनी रहती अनुपम।।

30.

धड़कन

बसिये प्रभु उर में सदा, ध्यान करूँ दिन रात।
हर धड़कन में प्रीत की, सदा रहे बरसात।।
सदा रहे बरसात, प्यास नैनों की बुझती।
जिह्वा पर हो नाम, हृदय में मूरत सजती।।
जीवन के आधार, डोर बंधन की रखिये।
दें अपना आशीष, सदा धड़कन में बसिये।।

31.
वीणा

आओ वीणा वादिनी, जीवन को दो तार।
धवल वसन नित धारिणी, करो सदा उद्धार।।
करो सदा उद्धार, उजाला उर में कर दो।
दूर करो अज्ञान, शुद्ध भावों से भर दो।।
देवी तुम संगीत, प्रीत जग में भर जाओ।
अम्बे दो आशीष, हंस पर चढ़ कर आओ।।

32.
नैतिक

कच्ची मिट्टी के घड़े, सोच समझ कर ढाल।
उत्तम बचपन जो गढ़ो, नैतिक होगा काल।।
नैतिक होगा काल, पतन क्यों होता जाता।
भूल गये आधार, विवश हो जाती माता।।
नैतिकता का पाठ, सिखाना होगा सच्ची।
रखना होगा धैर्य, अभी माटी है कच्ची।।

33.
विजयी

विजयी भव आशीष से, भरता मन में जोश।
शुभ दायक मंगल वचन, भरे ज्ञान का कोश।।
भरे ज्ञान का कोश, सफलता मंजिल चूमे।
जीवन में उल्लास, खुशी से मन ये झूमे।।
सच की होती जीत, तभी वो होते विनयी।
मातु पिता आशीष, हुआ ये जीवन विजयी।।

34.

देश

रक्षा माटी की करी, गाथा लिखी महान।
प्राणों का उत्सर्ग कर, रखा देश का मान।।
रखा देश का मान, मिली थी तब आजादी।
भूल गये बलिदान, बने अब क्यों उन्मादी।।
सबका सम अधिकार, यही है उत्तम शिक्षा।
सबका है ये देश, करें संस्कृति की रक्षा।।

35.

छाया

झगड़े होते देखता, घर का बरगद पेड़।
छाया भी तुम बाँट लो, बँटी खेत की मेड़।।
बँटी खेत की मेड़, उठी घर में दीवारें।
बरगद हुआ निराश, तले रहते थे सारे।।
उसकी टूटी आस, करें छाया पर रगड़े।
सूख गया वो आज, नहीं सह पाया झगड़े।।

36.

निर्मल

निर्मल मन में वास है, काशी काबा पीर।
मंदिर मस्जिद ढूँढते, बसें राम उर तीर।।
बसें राम उर तीर, सदा रखिये मन चंगा।
मन में सारे तीर्थ, रहे कठवत में गंगा।।
जीवन समिधा डाल, खरच होता ये प्रतिपल।
रखिये शुद्ध विचार, रहेगा जीवन निर्मल।।

37.

विनती

बालक हम नादान प्रभु, समझ न पायें मूल।
हाथ जोड़ विनती करें, क्षमा करें सब भूल।।
क्षमा करें सब भूल, घिरा कष्टों से जीवन।
राह बिछे थे शूल, दिशा से भटका था मन।।
विनती करूँ दिन रात, तुम्हीं हो जग के पालक।
देना तुम आशीष, तुम्हारे हैं हम बालक।।

38.

भावुक

सरिता भावों की बहे, बहे नैन से नीर।
भावुक मन की वेदना, समझे दूजो पीर।।
समझे दूजो पीर, व्यथा वो रो कर सहते।
सहते थे दिन रात, दुखों को उनके हरते।।
कहती 'अनु' ये बात, बना लो जीवन धरिता।
भावुक मन की आस, बहे अब सुख की सरिता।।

39.

धरती

माटी पूजें खेत की, करके कर्म पवित्र।
मान बढ़े भू पुत्र का, करें यत्न सब मित्र।।
करें यत्न सब मित्र, अधिक श्रम जो ये करते।
जाड़ा हो या धूप, सदा खेतों में रहते।।
सहें कठिन हालात, यही इनकी परिपाटी।
धरती का सम्मान, बुलाती अपनी माटी।।

40.

मानव

मानव गुण की श्रेष्ठता, सदा रहें समभाव।
सुख दुख का कारण यही, आशाओं की नाव।।
आशाओं   की   नाव,   नहीं   वश में इच्छाएं।
करता   रहा   जुगाड़,   समस्या मुख फैलाए।।
बढ़   जाता जब लोभ, तभी बनता वो दानव।
छोड़ लोभ अरु क्रोध, बनो उत्तम गुण मानव।।

41.

गागर

गागर   में   सागर   भरे, विद्वजनों के भाव।
भाव,   शब्द अरु लेखनी, करे   दूर उर घाव।।
करे   दूर   उर घाव, तृषा मन की मिट पाये।
वंदन   दोहाकार,   सृजन   करते   ही जाये।।
माँ   वीणा   आशीष,   भरें   भावों   से   सागर।
श्रेष्ठ समाहित सीप, छलकती इनकी गागर।।

42.

सरिता

सरिता सम स्त्री मानिये, अविरल रहा प्रवाह।
जीवनदात्री   ये   रहीं,   शूल   सहे   इस राह।।
शूल   सहे   इस   राह,   रही चंचल अविरामी।
देतीं   खुशी   अपार, सदा   बन के पथगामी।।
जन्म मिलन दो ठौर, रहा नदिया अरु वनिता।
रखना   होगा   मान, रहे   ये निर्मल सरिता।।

43.

गहरा

गहरा मन कितना रहा, कोई सका न माप।
माप जलधि संभव हुई, नाप कहाँ मन नाप।।
नाप कहाँ मन नाप, सदा दुख ओढ़े रहती।
रहती है मुस्कान, सभी से हँस कर कहती।।
कहती तेरी बात, रहा यादों का पहरा।
पहरा है उन घाव, छिपाए ये मन गहरा।।

44.

आँगन

घर आँगन की चौकड़ी, है अब बीती बात।
खेल खिलौने खेलते, सुंदर थी सौगात।।
सुंदर थी सौगात, सदा सजती थी बस्ती।
आँगन था आबाद, करी सखियों सँग मस्ती।।
मस्ती की थी रात, रही यादें प्रांगण पर।
लौटे दिन वो काश, भरा हो वो आँगन घर।।

45.

आधा

आधा बरतन है भरा, या आधा है रिक्त।
रिक्त देख मन रिक्त हो, सिक्त देख मन सिक्त।।
सिक्त देख मन सिक्त, भाव रखते हम जैसे।
जैसे होंगें भाव, सदा फल होंगे वैसे।।
वैसे हो जो कर्म, नहीं हो कोई बाधा।
बाधा होगी पार, भरेगा बरतन आधा।।

46.

यात्रा

यात्रा जीवन की चली, मिले मात्र दिन चार।
चार लोग के फेर में, रार मची थी रार।।
रार मची थी रार, वही मिलता जो बोये।
बोये पेड़ बबूल, कहाँ से अमिया होये।।
होये जग में प्रीत, खुशी की बढ़ती मात्रा।
मात्रा ही है राज, समझ कर पूरी यात्रा।।

47.

कोना

कोना मन खाली रखें, इस पर करें विचार।
जीवन झंझावात में, लेता हमें सँवार।।
लेता हमें सँवार, सदा ये रक्षा करता।
कैसे रखें विचार, बताता हमको रहता।।
सुन आख्या की बात, कभी मत इसको खोना।
रखे सुरक्षित राज, सदा मन का ये कोना।।

48.

मेला

मेला जीवन भर रहा, लगी बहुत थी भीड़।
अंत समय ऐसा हुआ, बचा न अपना नीड़।।
बचा न अपना नीड़, छले दुनिया मायावी।
भूले वो ये बात, यही पथ उनका भावी।।
होगी जीवन साँझ, जगत में रहे अकेला।
इस पर करो विचार, बड़ा अद्‌भुत है मेला।।

49.

धागा

माता ने यह सीख दी, तुरपन करो महीन।
दिखे नहीं धागा उधर, होगी तभी जहीन।।
होगी तभी जहीन, गुणों का वर्णन होगा।
ऊँगली में थे घाव, कष्ट कितना था भोगा।।
मानी अब ये बात, अधर को सिलना आता।
उर में लेकर पीर, सजाते रिश्ते माता।।

50.

बिखरी

छायी नभ में लालिमा, उतर रही है धूप।
बिखरी निखरी रक्तिमा, सुंदर सजा स्वरूप।।
सुंदर सजा स्वरूप, धरा ने ओढ़ी चुनरी।
खिले कमल अब ताल, विहग गाते हैं कजरी।।
नवल सुखद है भोर, कनक किरणें मुस्कायी।
लिये सृजन की आस, यहाँ हरियाली छायी।।

51.

गलती

गलती से गलती हुई, गलती है स्वीकार।
गलती को स्वीकारिये, मध्य बढ़ेगा प्यार।।
मध्य बढ़ेगा प्यार, नहीं रहता मन बोझिल।
दिल को मिलता चैन, नहीं हो दूजा चोटिल।।
करें गलत पर वार, तभी ये दुनिया चलती।
करना मत उपहास, मान लें अपनी गलती।।

52.

बदला

'बदला' की जो सोचते, खोते अपना चैन।
रात रात भर जागते, रूठे रूठे नैन।।
रूठे रूठे नैन, सोचतें कितनी बातें।
उलझ गया इंसान, देख के कितनी घातें।।
आख्या की सुन बात, समझ लो अगला पिछला।
मत करना तुम वार, नहीं लो कोई बदला।।

53.

कलम

मेरी दुनिया सिमट के, रही मित्र के साथ।
नया मित्र अद्‌भुत रहा, लिया कलम जो हाथ।।
लिया कलम जो हाथ, नई रचना नित लिखती।
मिला छन्द का साथ, कलम सुगंध सम बहती।।
नव कुंडलियां रोज, सिखाती शाला तेरी।
कलम सँवारे आप, निखारी दुनिया मेरी।।

54.

तपती

तपती धरती मन रहा, लिये छाँव की आस।
पिय के शीतल प्रेम की, सदा लगी थी प्यास।
सदा लगी थी प्यास, तृषा बढ़ती ही जाये।
बैठ रहे दिन रात, तृप्ति कैसे मन पाये।
होता ह्रदय उदास, सदा मैं भटका करती।
दे दो एक उपाय, संतुष्ट हो तपती धरती।

55.

मेरा

मेरा, मैं के फेर में, फँसा हुआ इंसान।
होड़ जीतने की लगी, कर्ता का अभिमान।।
कर्ता का अभिमान, प्रबल होता ही जाता।
रहते मद में चूर, कहाँ फिर झुकना आता।।
जीवन प्रभु की देन, यहाँ कितने दिन डेरा।
करते रहते रार, निहित सब कुछ में मेरा।।

56.

सबका

सबका मालिक एक है, मूल तत्व पहचान।
जाति धर्म का द्वेष क्यों, कहते संत सुजान।।
कहते संत सुजान, कर्म ही उत्तम पूजा।
मानवता हो धर्म, नहीं इसके सम दूजा।।
आख्या की सुन बात, लगा दें जीवन खुदका।
श्रद्धा अरु विश्वास, नियम जीवन में सबका।।

57.

आगे

स्वर्णिम युग है सामने, भूलें दुखद अतीत।
आगे बढ़ते जाइये, काल गया अब बीत।।
काल गया अब बीत, सुनहरी किरणें बिखरीं।
सुंदर सुखद प्रभात, लिये आशायें निखरीं।।
मिटता उर संताप, हुआ मुखड़ा अब रक्तिम।
बदल गया दिनमान, हुआ सुंदर युग स्वर्णिम।।

58.

मौसम

रातें ठंडी हो रहीं, जलने लगे अलाव।
मौसम के इस रूप में, अलग अलग हैं भाव।।
अलग अलग हैं भाव, कहीं मौसम की मस्ती।
रहता कहीं अभाव, सड़क पर रातें कटती।
करती क्या सरकार, करे क्या खाली बातें।।
हम सब करें प्रयास, सुखद हो सबकी रातें।।

59.

जाना

जाना सबको एक दिन, करें तीन अरु पाँच।
राजनीति हर क्षेत्र में, घुट घुट मरता साँच।।
घुट घुट मरता साँच, नहीं कुछ लेना देना।
उलझ रहे हर बात, खिला के झूठ चबेना।।
करते हैं क्यों रार, यहाँ पर खाली आना।
कर्म करें निष्काम, यहाँ से खाली जाना।।

60.

करना

करना है कुछ काम क्यों, मिले मुफ्त जब माल।
लें सरकारी योजना, भूले अपनी चाल।।
भूले अपनी चाल, करें अब झूठी बातें।
मची छूट की लूट, मिले हैं फर्जी खाते।।
भूल गये औकात, सजा से भूले डरना।
करो न अनुचित काम, नियम का पालन करना।।

61.

दीपक

बाती अंतस की बना, तेल समर्पण डाल।
दीपक बन कर खुद जलें, जीवन उत्तम ढाल।।
जीवन उत्तम ढाल, सत्य का पालन करना।
करना पर उपकार, सदा नदिया सम चलना।।
आख्या समझी मूल, इसी धरती का खाती।
करना है प्रतिकार, बना अंतस की बाती।।

62.

पूजा

पूजा है उत्तम यही, रखें बड़ों का ध्यान।
सेवा का जो व्रत लिये, तभी मिलें भगवान।।
तभी मिलें भगवान, मिला अनमोल खजाना।
मिलता है आशीष, उसी से सपन सजाना।।
जीवन का ये सार, नहीं उत्तम कुछ दूजा।
रखिये श्रद्धा भाव, कर्म ही सच्ची पूजा।।

63.

थाली

थाली चमचे कर रहे, आपस में तकरार।
श्रेष्ठ कौन की रार को, थाली देती धार।।
थाली देती धार, दिखा तू अपने जलवे।
तुम तो हो बदनाम, सदा तुम चाटो तलवे।।
चमचा बोले बोल, बिना मेरे तू खाली।
रक्खो यह औकात, भरो निर्धन घर थाली।।

64.

बाती

बाती तिल तिल कर जले, होता दीपक नाम।
रीति जगत की जानिये, कहिये अपना काम।।
कहिये अपना काम, यहाँ तू तिल तिल मरता।
गया समय वो बीत, काम ही बोला करता।।
आज खोलती राज, नहीं अपनी कह पाती।
तिल तिल जलती रोज, जले जैसे ये बाती।।

65.

आशा

आशा बहनें कर रहीं, जन जन का कल्याण।
गाँव नगर में घूमती, करें दूर ये त्राण।।
करें दूर ये त्राण, स्वस्थ अब जीवन होता।
रखें मातु का ध्यान, तनय माँ आँचल सोता।।
उन्नत करें समाज, भगातीं दूर निराशा।
करें सभी सम्मान, द्वार पर जब हो आशा।।

66.

उड़ना

उड़ना जनता तुम नहीं, सुन नेता की बात।
सब्जबाग की आस दे, नेता दें आघात।।
नेता दे आघात, लुभावन वादे सारे।
'मत' को रहे खरीद, दिखाते दिन में तारे।।
गिरगिट जैसा रंग, नहीं तुम इनसे जुड़ना।
मत करना विश्वास, स्वयं के बूते उड़ना।।

67.

खिलना

खिलना काँटो मध्य ज्यों, नागफनी का फूल।
बनें विषम अनुरूप जो, जीवन हो अनुकूल।।
जीवन हो अनुकूल, दुखों में निखरा करता।
होना नहीं निराश, सदा सोना ही तपता।
साझा करती राज, लिखा था दुख से मिलना।
नागफनी का पेड़, सिखाता हँस हँस खिलना।

68.

होली

होली क्या खेलें सखी, उठती हिय में पीर।
साजन सीमा पर खड़े, धरी न जाये धीर।
धरी न जाये धीर, सुता मुखड़ा जब देखा।
पूछ रही है प्रश्न, तात क्यों सीमा रेखा।
यहाँ बढ़े गद्दार, वहाँ वो झेलें गोली।
लगती अंदर आग, बहाते लहु वो होली।

69.

साजन

सजनी बैठी द्वार पर, अँखियां रहीं निहार।
साजन हैं परदेश में, सूना है संसार।
सूना है संसार, पीर अब सही न जाती।
एक बूँद की प्यास, सीप ढूँढे है स्वाती।
सहती ये हालात, बिना चन्दा ज्यों रजनी।
लगा मिलन की आस, द्वार पर बैठी सजनी।

70.

सजना

सजना साजन के लिये, निभा प्रीत की रीति।
ये सोलह श्रृंगार ही, सकल जगत की नीति।।
सकल जगत की नीति, रहे श्रृंगार अधूरा।
साजन जो हैं पास, खिला है मुखड़ा पूरा।।
चूड़ी बिंदी हार, संग पायल का बजना।
प्रभु देना आशीष, सदा सँग सँग हो सजना।।

71.

डोरी

डोरी नटिनी साधती, प्राण कष्ट में डाल।
दो रोटी की आस में, जीवन है बदहाल।।
जीवन है बदहाल, कहाँ अब इन्हें सहारा।
पापी पेट सवाल, नहीं ढकता तन सारा॥
ताली बजते हाथ, दिखाती करतब गोरी।
लिये भरण का भार, रखें बल्ली अरु डोरी।।

72.

बोली

बोली क्यों है विष भरी, तोल मोल के बोल।
बात करें अब नीति की, बिगड़ा है माहौल।।
बिगड़ा है माहौल, सुधारें मिल कर नेता।
अपनी ढपली राग, बजा! ये बनें चहेता।।
पीछे छूटा देश, बनाई अपनी टोली।
अपने हित को साध, बोलते कड़वी बोली।।

73.

पाना

'पाना है मंजिल मुझे', लक्ष्य यही अब ठान।
निष्ठा अरु समर्पण से, हो मंजिल आसान।।
हो मंजिल आसान, निडर हो कदम बढ़ाना।
बाधा होगी पार, कभी मत तुम घबराना।।
शूल बिछे हों राह, सदा चलते ही जाना।
लक्ष्य यही अब एक, मुझे मंजिल है पाना।।

74.

खोना

'खोना पाना' जाल में, उलझा है इंसान।
'जीत हार' के खेल का, रखें नया अभियान।।
रखें नया अभियान, खुशी जीवन में भरना।
सुख दुख में समभाव, सदा हँसते ही रहना।।
आख्या की सुन बात, लिखा जो, वो ही होना।
मूल तत्व को जान, चैन क्यों अपना खोना।।

75.

यादें

बीती बातें याद हैं, किये समाहित भाव।
कुछ यादों से सुख मिले, कुछ से रिसते घाव।।
कुछ से रिसते घाव, खुशी को पाना चाहा।
कब तक सुनें कराह, किया बातों को स्वाहा।।
कब तक सहती घाव, गरल मैं कब तक पीती।
जीवन की अब साँझ, भुलाईं बातें बीती।।

76.
छोटी

बातें छोटी ही सही, बिगड़ रहे सम्बन्ध।
सहन शक्ति का ह्रास हैं, छूटा जाये स्कंध।।
छूटा जाये स्कंध, बने थे कभी सहारा।
हुई अहम की जीत, छूटता साथी प्यारा।।
बीत गया वो काल, सुखद थी बीती रातें।
लायें वही प्रभात, भूलिये छोटी बातें।।

77.
मीठी

खट्टी मीठी चटपटी, कड़वा तीखा स्वाद।
दही जलेबी पापड़ी, फीका रहा सलाद।।
फीका रहा सलाद, मिठाई सब पर भारी।
खायें मीठा खूब, करें पर कसरत सारी।।
मीठे की थी रार, हुई थी मीठी कट्टी।
सेहत पर अब मार, कि भाती चटनी खट्टी।।

78.
बातें

बातें प्यारी तोतली, पायल सी झंकार।
इत उत थी वो डोलती, बहती मुग्ध बयार।।
बहती मुग्ध बयार, सुता का मुखड़ा चमके।
घर आँगन की शान, सदा वो ऐसे दमके।।
सुन सुन उसकी बात, कटीं थी कितनी रातें।
सूना मन का द्वार, करें अब किससे बातें।।

79.

चमका

तारा चमका भोर का, हुआ अंधेरा दूर।
सजती थाली आरती, दीपक और कपूर।।
दीपक और कपूर, भरे मन में उजियारा।
करो प्रभो का ध्यान, मिटे अंतस अँधियारा।।
भवसागर से पार, फिरे क्यों इत उत मारा।
मिलता जो आशीष, चमकता जीवन तारा।।

80.

गीता

गीता का उपदेश ये, कर्म करो निष्काम।
लोभ मोह अरु क्रोध तज, जपो कृष्ण का नाम।।
जपो कृष्ण का नाम, करो ये जीवन अर्पण।
रहो सदा समभाव, सदा हो प्रेम समर्पण।।
कृष्ण हरे अज्ञान, भरें फिर हिय घट रीता।
श्रद्‌धा के भगवान, यही कहती है गीता।।

81.

गुरु

माना है गुरु आपको, सीखे नये विधान।
कुंडलियां नवगीत रच, पाते नूतन ज्ञान।।
पाते नूतन ज्ञान, धैर्य रख आप सिखाते।
हो भाषा उत्थान, इसी में समय लगाते।।
लेते हम संकल्प, लक्ष्य अब हमको पाना।
मिला कलम का साथ, इसे गुरु अपना माना।।

82.

कहना

फैला शिक्षा क्षेत्र में, ये कैसा व्यापार।
कहना है यह बात अब, इस पर करो विचार।।
इस पर करो विचार, जड़ें है कितनी गहरी।
गुरु का कर सम्मान, रहे ये शिक्षा प्रहरी।।
नहीं रहे वो शिष्य, रखे रहते मन मैला।
गुरु वशिष्ठ सम कौन, सकल यश जिनका फैला।।

83.

सहना

सहना मत अन्याय को, इससे बड़ा न पाप।
स्वाभिमान उर में भरें, जतन करें अब आप।।
जतन करें अब आप, यही जीवन की पूंजी।
धर्मयुद्ध का साथ, मुखर वाणी अब गूंजी।।
रखें मान का मान, यही है उत्तम गहना।
मत करना अन्याय, कभी मत इसको सहना।।

84.

वंदन

लिखते गाथा शौर्य की, करके बाधा पार।
वीर जवानों का करें, वंदन बारम्बार।।
वंदन बारम्बार, नहीं अनिष्ट से डरते।
कैसे हो हालात, देश की रक्षा करते।।
शत शत बार प्रणाम, सजग ये हरदम दिखते।
अर्पित श्रद्धा भाव, नया भारत ये लिखते।

85.

आसन

आसन बारह जो करे, बढ़े रक्त संचार।
सूर्य नमन प्रतिदिन करें, देता बुद्धि निखार।।
देता बुद्धि निखार, रोग को दूर भगाता।
करिये प्राणायाम, स्वयं से भेंट कराता।।
ओम मंत्र का जाप, शुद्ध होता है वासन।
तन अरु मन को साध, करें यह बारह आसन।।

86.

आतुर

नैना आतुर देखते, साजन तेरी राह।
राह देख अँखियाँ थकीं, चाह! मिलन की चाह।।
चाह! मिलन की चाह, कब होगी यह पूरी।
पूरी बीती रात, रही मैं यहाँ अधूरी।।
अधूरी रही आज, सजी तारों से रैना।
रैना में सँग चाँद, निहारे आतुर नैना।।

87.

आभा

निखरे आभा सत्य से, कहते संत सुजान।
मुखमंडल पर लालिमा, फैले चहुँदिश मान।।
फैले चहुँदिश मान, सत्य को पूँजी मानो।
पूर्ण करो संकल्प, यही प्रण मन में ठानो।।
मिला प्रभो आशीष, नहीं कष्टों में बिखरे।
अडिग सत्य पर आज, इसी से अंतस निखरे।।

88.

चितवन

मिलना पहली बार का, अब तक मुझको याद।
चितवन नैना बोल के, किये वाद प्रतिवाद।।
किये वाद प्रतिवाद, बसा उर तेरी सूरत।
हुई अलग थी राह, समा के तेरी मूरत।।
कटे नहीं थी रात, सूख कर भूला खिलना।
हाथों में लकीर, लिखा था तेरा मिलना।।

89.

मोहक

राधा मोहक रूपिणी, रग रग में संगीत।
राह देखती कृष्ण की, धड़कन धड़कन मीत।।
धड़कन धड़कन मीत, बसी उर मोहक सूरत।
मुरलीधर गोपाल, प्रेम की तुम हो मूरत।।
कृष्ण करें मनुहार, रहूँ मैं कैसे आधा।
राधा में हैं श्याम, श्याम उर बसतीं राधा।।

90.

शीतल

शीतल जल सम क्रोध हो, बने नहीं ये भाप।
क्रोध बहे जो क्षीर सम, उबले बाहर आप।।
उबले बाहर आप, मनुज जब आपा खोता।
होता संयमहीन, सदा जीवन में रोता।।
सुनिये सब ये बात, बने क्यों रहते पीतल।
स्वर्ण सरिस हों आप, क्रोध को करके शीतल।।

91.

हारा

हारा जीता कौन है, 'मुफ्त' तमाशा खेल।
परिपाटी मतदान की, 'बिरयानी' सँग मेल।।
बिरयानी सँग मेल, 'बाग' के होते चर्चे।
नेताओं की जीत, कराती कितने खर्चे।।
अपशब्दों का दौर, किसी को 'डंडा" मारा।
हुआ 'मुफ्त' का लोभ, तंत्र हरदम ही हारा।।

92.

जीता

जीता जग में कौन है, सभी देखते हार।
हार गया सिकंदर वो, लिये खड़ग में धार।।
लिये खड़ग में धार, अहम से अपने हारा।
वो अभिमानी क्रूर, स्वयं को उसने मारा।।
समझो इसका मूल, नहीं 'कर' होगा रीता।
नम्रता गुण महान, रखे पोरस ही जीता।।

93.

नारी

नारी का अपमान कर, करते क्यों उपभोग।
विज्ञापन में छाप के, कैसा करा प्रयोग।।
कैसा करा प्रयोग, समझते भोग्या उसको।
हुआ पतन जो आज, कहाँ चिंता अब किसको।।
सकल सृजन की सार, वस्तु बनती बेचारी।
रही धुरी परिवार, प्रेम की मूरत नारी।।

94.

साहस

करिये बुलंद हौसला, साहस निष्ठा संग।
कदम सफलता चूमती, मंजिल के नव रंग।।
मंजिल के नव रंग, मौत से कायर डरते।
साहस से भरपूर, कर्म निष्ठा से करते।।
खोने को क्या पास, नहीं जीवन में डरिये।
साहस की ले डोर, कर्म उत्तम ही करिये।।

95.

नटखट

नटखट माखन चोर जब, चले गोपिका द्वार।
ग्वाल बाल के सँग करें, गोपी से मनुहार।।
गोपी से मनुहार, मँगाईं माखन मैया।
मिश्री दो! दो चार, चराने जाता गैया।
गोपी थी नादान, सुनी मिश्री की कटकट।
पड़ी कृष्ण को डाँट, चुराता माखन नटखट।।

96.

अंकुश

अंकुश जीवन में रहे, अनुशासन आधार।
राह भटकते नवयुवक, भूले अब यह सार।।
भूले अब यह सार, भूल बैठे मर्यादा।
चकाचौंध में मस्त, ओढ़ते झूठ लबादा।।
मातु पिता की सीख, नहीं हो कभी निरंकुश।
उन्नत नैतिक काल, रहे जीवन में अंकुश।।

97.

चंदन

चंदन टीका भाल पर, शीतल गुण पहचान।
'राज वृक्ष' की श्रेष्ठता, उत्तम औषधि जान।।
उत्तम औषधि जान, रोग को दूर भगाता।
करिये लेप प्रयोग, यही सौंदर्य बढ़ाता।।
पूजा रहे अपूर्ण, शीश प्रभु टीका वंदन।
बने चिता की काष्ठ, संग जाता है चंदन।।

98.

थोड़ा

थोड़ा थोड़ा बीतता, उतरी जीवन साँझ।
धीरे धीरे चल सखी, सुनते सुनते झाँझ।।
सुनते सुनते झाँझ, थका मन चलते चलते।
कहीं नहीं विश्राम, रहे पल छलते छलते।।
आती जाती श्वास, पूछती क्या क्या जोड़ा।
गिन गिन दिया जवाब, रिक्त घट थोड़ा थोड़ा।।

99.

सपना

सपना जग कर देखिये, बीते काली रात।
खुले नैन से ही सधे, नूतन नवल प्रभात।।
नूतन नवल प्रभात, लक्ष्य दुर्गम पथ जानें।
करके बाधा पार, मिले मंजिल! ये मानें।।
सपनों का संसार, सजाना तुम सब अपना।
कठिन लक्ष्य को भेद, बसाना दूजा सपना।।

100.

पूरा

होता पूरा आज ये, शतकवीर का काम।
उत्तम शाला छन्द को, शत शत करें प्रणाम।।
शत शत करें प्रणाम, कलम की सुगंध फैली।
प्रतिदिन के दो शब्द, शिल्प में भाषा शैली।।
नित नित नये प्रयोग, लगाते इसमें गोता।
प्रकट करें आभार, काम अब पूरा होता।।

__00__

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- **अनिता सुधीर 'आख्या'**

जन्मतिथि- दो अक्टूबर

पिता- स्व० श्री रविन्द्र नाथ श्रीवास्तव

माता- श्रीमती शीला श्रीवास्तव

पति- श्री सुधीर कुमार श्रीवास्तव

शिक्षा- एम.एस सी.कार्बनिक रसायन, लखनऊ विश्वविद्यालय १९८२, केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान मे औषधि क्षेत्र में पांच वर्ष का शोध अनुभव

कार्य- अध्यापन

रुचि- पठन पाठन

ब्लॉग- काव्य कूची

स्थाई पता- १३/१०३, सेक्टर १३, विकास नगर, लखनऊ, २२६०२२

फोन नं.- ९४५०४६४०१६

email - luckysudhir02@gmail.com

प्रकाशित रचना -

विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित समसामायिक लेख और कविताएं

प्रकाशित पुस्तकें-

सागर के मोती- लघुकथायें (साझा संग्रह), प्रेम के रहस्यमयी रंग- काव्य (साझा संग्रह), ये दोहे बोलते हैं- दोहा छन्द (साझा संग्रह),

अन्य साझा संकलन-

काव्योदय, पंच रश्मि-काव्य संकलन, रंग बिरंगी- नारी के विविध रूप पर लेख, नन्हीं फुलवारी- बाल कविताएं (साझा संकलन), निर्झर लेखनी- छन्द बद्ध, झरोखा, शब्दभाव की लहरें

सम्मान- विभिन्न पटल पर भिन्न भिन्न विधाओं में श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-228-9

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/